धरती मां

रामनाथ सिंह
रा.ज.सं.,रूड़की

जन्म तो मैंने दिया सबको यहां,
फिर क्यों अब है मुझे दर्दे वफ़ा।

अब तो क्यों डरने लगी है बहनें अपने भाईयों से,
अब तो भाई भी भाई से क्यों बचने लगा।

फूल गुलशन में खिलें हर रंग के,
फिर क्यों एक–दूसरे से जलने लगा।

क्या मेरे अन्न में कमी सी आ गई है,
फिर क्यों एक–दूसरे से बचने लगा।
एक घर में पले–बड़े हुए हैं हम,
फिर क्यों एक–दूसरे से बचने लगा।

क्या कमी थी मां के इस दूध में,
क्यों जहर सा इसमें अब घुलने लगा।
जिन्दगी की राह अब थमने लगी,
अब खुदी का दौर क्यों चलने लगा।

क्यों बरसती है बौछारें बेबफ़ाई की,
क्यां वफ़ा का नाम अब जलने लगा।
अब तो क्यों डरने लगी है बहनें अपने भाईयों से,
अब तो भाई भी भाई से क्यों बचने लगा।

गिरने लगी अब बूंदें यहां अब खून की,
बारिश का मौसम क्यूं अब बदलने लगा।
अपने ही घर में हुए बेगाने हम,
अपने ही घर में लगने लगी क्यों आग सी।

अब तो क्यों डरने लगी है बहनें अपने भाईयों से,
अब तो भाई भी भाई से क्यों बचने लगा।

जन्म तो मैंने दिया सबको यहां,
फिर क्यों अब है मुझे दर्दे वफ़ा।